



Central University of Rajasthan

Center for Distance and Online Education (CDOE)

Dear Learner,

Greetings from the CDOE!

As you are aware, every student enrolled in the ODL Programme is required to write and submit assignments for each course. These assignments form an important component of the continuous assessment and carry **30% weightage** of the overall grade for each course.

Please carefully note the following instructions:

General Instructions

1. Please remember to attach the designated cover page on every assignment you submit. The format of cover page is attached for your reference.
2. All sections of the assignment are compulsory in nature. All questions are to be attempted, except for those where options are provided.
3. Please write the answer mentioning the correct corresponding question number given in the assignment.
4. Please write on continuous pages and number each page.
5. All assignments should be handwritten. Typed or printed assignment will not be accepted.
6. it is strongly recommended to keep a copy (photocopy or scanned) of the assignment sent by you for your record.
7. **The last date for submitting assignments is 10.06.2026.** Submission of assignments is required to appear in the End Semester Examination.
8. Assignments can be deposited at CDOE, Curaj or sent through post to **Director, Centre for Distance and Online Education (CDOE), Room 102, Administration Building, Central University of Rajasthan, Bandarsindari, District: Ajmer – 305817, Rajasthan.**

Director

Centre for Distance and Online Education (ODL & OP)



राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय Central University of Rajasthan

Assignment

Open and Distance Learning Programme

Learner's Name :

Enrollment Number :

Academic year and Session :

Programme Name and Code :

Course Code :

Course Title :

.....

Learner's Signature

Centre for Distance and Online Education (CDOE)

Room 102, Administration Building, Central University of Rajasthan

N.H. 8, Bandarsindari, District: Ajmer - 305817, Rajasthan

Website: www.curaj.ac.in | Email: cdoe@curaj.ac.in | Phone : 01463 257 556

राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय
दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र
मुक्त एवं दूरस्थ शिक्षा कार्यक्रम

सत्रीय कार्य

कार्यक्रम का नाम : एम. ए. (हिंदी)

प्रथम छमाही

कार्यक्रम कोड : ODLMAH

निर्देश :

1. एम.ए. (हिंदी) कार्यक्रम में शिक्षार्थी के सतत मूल्यांकन के लिए पाठ्यक्रम की प्रत्येक पाठ्यचर्या (कोर्स) में दो सत्रीय कार्य की योजना की गयी है।
2. शिक्षार्थी दोनों सत्रीय कार्य पूर्ण कर नियत अवधि में जमा करवाने पर ही संबंधित पाठ्यचर्या (कोर्स) की सत्रांत परीक्षा में उपस्थित हो सकता है।
3. प्रत्येक सत्रीय कार्य पंद्रह (15) पूर्णांक का है, इस प्रकार से प्रत्येक पाठ्यचर्या (कोर्स) के लिए सत्रीय कार्य के लिए कुल तीस (30) पूर्णांक नियत है। सत्रीय कार्य में प्रत्येक प्रश्न के लिए पाँच (05) अंक निर्धारित है।
4. प्रत्येक सत्रीय कार्य में शिक्षार्थी को तीन प्रश्नों के विश्लेषणात्मक उत्तर लिखने हैं, शिक्षार्थी से अपेक्षा की जाती है कि वह आंतरिक विकल्पों को ध्यान में रखते हुए तीनों प्रश्नों को हल करने का प्रयास करेगा।
5. सत्रीय कार्य शिक्षार्थी की स्वयं की हस्तलिपि में होना आवश्यक है, टंकित एवं प्रिंटेड सत्रीय कार्य स्वीकार नहीं किए जाएँगे।
6. शिक्षार्थी नियत अवधि में सत्रीय कार्य पूर्ण कर निम्नलिखित पते पर डाक द्वारा भेजें अथवा व्यक्तिशः उपस्थित होकर जमा करवाएँ।

सत्रीय कार्य जमा करवाने का पता :

निदेशक, दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, कमरा संख्या – 102, प्रशासनिक भवन, राजस्थान केन्द्रीय विश्वविद्यालय, बांदर सिंदरी, जिला – अजमेर, 305817, राजस्थान

Director, Centre for Distance and Online Education (CDOE), Room - 102, Administration Building, Central University of Rajasthan, Bandarsindari, District - Ajmer – 305817, Rajasthan.

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 हिंदी साहित्य के इतिहास के कालविभाजन पर प्रकाश डालते हुए विभिन्न कालों की समय सीमा एवं उनसे संबंधित प्रमुख आलोचकों के मतों की विस्तृत विवेचना कीजिए। 05
- प्र. 02 हिंदी साहित्य के इतिहास लेखन की परंपरा का परिचय देते हुए हिंदी साहित्य के प्रमुख इतिहास ग्रंथों का परिचयात्मक विवरण दीजिए। 05
- प्र. 03 आदिकाल के नामकरण की समस्या पर प्रकाश डालते हुए आदिकाल की प्रमुख प्रवृत्तियों का परिचय दीजिए। 05
- प्र. 04 भक्ति आंदोलन के उदय की स्थितियों को स्पष्ट करते हुए लोक जागरण में भक्ति काव्य की भूमिका का मूल्यांकन कीजिए। 05
- प्र. 05 निर्गुण भक्ति का आशय स्पष्ट करते हुए प्रमुख संत - सूफी कवियों एवं उनकी रचनाओं का परिचयात्मक विवरण दीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 हिंदी सगुण भक्ति काव्य पर विभिन्न वैष्णव भक्ति संप्रदायों के प्रभाव की विवेचना कीजिए। 05
- प्र. 02 हिंदी भक्ति साहित्य में अष्टछाप के महत्व का मूल्यांकन कीजिए। 05
- प्र. 03 हिंदी साहित्य के भक्तिकाल में राम भक्ति से संबंधित साहित्य का विस्तृत विवरण दीजिए। 05
- प्र. 04 रीतिकाव्य का आशय स्पष्ट करते हुए रीतिबद्ध, रीतिसिद्ध, एवं रीतिमुक्त काव्यधाराओं पर प्रकाश डालिए। 05
- प्र. 05 'लक्षण ग्रंथ' का तात्पर्य बताते हुए रीतिकाल में 'लक्षण ग्रंथ' निर्माण की परंपरा का परिचय दीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 भाषा की परिभाषा देते हुए भाषा की विशेषताओं एवं प्रवृत्तियों पर प्रकाश डालिए। 05
- प्र. 02 भाषा के रूप में हिंदी के उद्भव एवं विकास पर निबन्ध विश्लेषणात्मक लिखिए। 05
- प्र. 03 दक्खिनी हिंदी से आप क्या समझते हैं? विस्तार से बताइए। 05
- प्र. 04 भाषा एवं बोली के अंतर्संबंध को स्पष्ट करते हुए हिंदी की बोलियों का परिचय दीजिए। 05
- प्र. 05 हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार में निरत राष्ट्रीय महत्व की संस्थाओं का विवरण दीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान है।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 भाषा के सन्दर्भ में पिजिन एवं क्रेओल का तात्पर्य बताइए। 05
- प्र. 02 अर्थविज्ञान का आशय स्पष्ट करते हुए अर्थबोध (संकेतग्रह) के साधन एवं बाधक कारणों की विवेचना कीजिए। 05
- प्र. 03 राजभाषा, राष्ट्रभाषा, एवं संपर्क भाषा के मध्य अंतर स्पष्ट कीजिए तथा इन तीनों रूपों में हिंदी की वस्तुस्थिति का मूल्यांकन कीजिए। 05
- प्र. 04 भारत के संविधान में राजभाषा एवं हिंदी से संबंधित अनुच्छेदों का उल्लेख कीजिए। 05
- प्र. 05 वैश्विक परिप्रेक्ष्य में हिंदी की वर्तमान स्थिति विषय पर विश्लेषणात्मक निबन्ध लिखिए। 05

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 “विद्यापति पदावली भक्ति का नहीं शृंगार का काव्य है।” इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए। 05
- प्र. 02 विद्यापति पदावली के भाषिक सौन्दर्य पर टिप्पणी लिखिए। 05
- प्र. 03 आदिकालीन शृंगारिक रासो काव्य ‘बीसलदेव रासो’ का परिचय देते हुए ‘बीसलदेव रासो’ का कथानक संक्षिप्त में प्रस्तुत कीजिए। 05
- प्र. 04 ‘भ्रमरगीत सार’ के आलोक में सूरदास की दार्शनिक चेतना का मूल्यांकन कीजिए। 05
- प्र. 05 साहित्य में ऋतु वर्णन की बारहमासा पद्धति को ‘नागमती वियोग खंड’ के उदाहरण से स्पष्ट कीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 विनय-पत्रिका की भाषिक विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए। 05
- प्र. 02 “भक्ति-रस का पूर्ण परिपाक जैसा विनय-पत्रिका में देखा जाता है, वैसा अन्यत्र नहीं।” आचार्य रामचंद्र शुक्ल के इस कथन का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। 05
- प्र. 03 मीरा के पदों में चित्रित कृष्ण के स्वरूप की विवेचना करिए। 05
- प्र. 04 बिहारी की समास-शक्ति से आप क्या समझते हैं ? विस्तृत विवेचना कीजिए। 05
- प्र. 05 “घनानंद का विरह ‘मौन मधि पुकार’ है।” इस कथन की व्याख्या कीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 'हिंदी आलोचना के उद्भव एवं विकास' पर विश्लेषणात्मक निबन्ध लिखिए। 05
- प्र. 02 भारतेंदुयुगीन प्रमुख आलोचकों एवं आलोचना कृतियों का परिचयात्मक विवरण दीजिए। 05
- प्र. 03 द्विवेदी युग में हिंदी आलोचना के स्वरूप को स्पष्ट कीजिए। 05
- प्र. 04 'आलोचना' शब्द के विभिन्न पर्याय देते हुए साहित्यिक विधा के रूप में आलोचना के स्वरूप का विश्लेषण कीजिए। 05
- प्र. 05 हिंदी आलोचना में प्रयुक्त प्रमुख आलोचना पद्धतियों पर प्रकाश डालिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 आचार्य रामचंद्र शुक्ल के आलोचनात्मक अवदान पर विस्तृत टिप्पणी लिखिए। 05
- प्र. 02 हिंदी आलोचना में आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी के योगदान का मूल्यांकन कीजिए। 05
- प्र. 03 समकालीन हिंदी आलोचना में व्यवहृत समीक्षा पद्धतियों पर प्रकाश डालिए। 05
- प्र. 04 रामविलास शर्मा की आलोचनात्मक कृतियों का परिचयात्मक विवरण दीजिए। 05
- प्र. 05 छायावाद की आलोचना के सन्दर्भ में आलोचक नंददुलारे वाजपेयी के आलोचना कर्म का मूल्यांकन कीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 अनुवाद से आप क्या समझते हैं ? वर्तमान समय में अनुवाद की उपयोगिता का मूल्यांकन कीजिए। 05
- प्र. 02 'शब्दानुवाद' का आशय स्पष्ट कीजिए तथा शब्दानुवाद के गुण – दोषों की विवेचना कीजिए। 05
- प्र. 03 अनुवाद की परिभाषा देते हुए अनुवाद के प्रकारों पर टिप्पणी लिखिए। 05
- प्र. 04 साहित्यिक अनुवाद में आने वाली समस्याओं पर विचार कीजिए। 05
- प्र. 05 अनुवाद की प्रक्रिया बताते हुए स्पष्ट कीजिए कि वाक्य रचना अनुवाद को किस प्रकार प्रभावित करती है। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 मशीनी अनुवाद को समझाते हुए आधुनिक प्रौद्योगिकी के युग में मशीनी अनुवाद की भूमिका स्पष्ट कीजिए। 05
- प्र. 02 सफल अनुवाद के लिए पुनरीक्षण की आवश्यकता पर प्रकाश डालिए। 05
- प्र. 03 'अनुवादक में अपेक्षित अपरिहार्य गुण' विषय पर टिप्पणी लिखिए। 05
- प्र. 04 पारिभाषिक शब्दावली का अनुवाद में योगदान स्पष्ट करते हुए पारिभाषिक शब्दावली के अभाव का अनुवाद पर प्रभाव विश्लेषित कीजिए। 05
- प्र. 05 अनुवाद के उपकरण क्या हैं ? विस्तार से बताइए। 05

सत्रीय कार्य : 01

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 मीरां के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं के प्रकाश में उनका जीवन-वृत्त प्रस्तुत कीजिए। 05
- प्र. 02 मध्यकालीन कृष्ण भक्ति परंपरा में मीरां का स्थान निर्धारित कीजिए। 05
- प्र. 03 'मीरां वृहत् पदावली' के आधार पर मीरां की काव्यभाषा की विशेषताएँ उजागर कीजिए। 05
- प्र. 04 'मीरां वृहत् पदावली' में मीरां के पदों का प्रतिपाद्य सोदाहरण स्पष्ट कीजिए। 05
- प्र. 05 'मीरां वृहत् पदावली' के आधार पर कवयित्री मीरां की भक्ति के शास्त्रीय स्वरूप की विवेचना कीजिए। 05

सत्रीय कार्य : 02

पूर्णांक : 15

निम्नलिखित प्रश्नों में से किन्हीं तीन प्रश्नों के उत्तर दीजिए। सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

(शब्द सीमा : 500 - 700 शब्द)

- प्र. 01 मीरां की कविता में स्त्री अस्मिता के बिन्दुओं को रेखांकित कीजिए। 05
- प्र. 02 "प्रतिरोध मीरां की कविता की मुख्य वस्तु है।" इस कथन के पक्ष में तर्क दीजिए। 05
- प्र. 03 "मीरां ने केवल मधुर रस बहाया है। मधुर कहा है, उसके पास माधुर्य के अतिरिक्त कुछ है ही नहीं।" इस कथन के आलोक में मीरां की भक्ति के स्वरूप का मूल्यांकन कीजिए। 05
- प्र. 04 संप्रदाय-निरपेक्ष कवयित्री के रूप में मीरां की कृष्णभक्ति का वैशिष्ट्य विश्लेषित कीजिए। 05
- प्र. 05 'मीरां की कविता की वर्तमान प्रासंगिकता' विषय पर निबन्ध लिखिए। 05